REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 4 | JANUARY - 2018

विश्व में भौगोलिक ज्ञान का विकास (एक संक्षिप्त विवरण)

Dr. Satyabir Yadav
Head, Department of Geography , Govt. Collegefor Women, Pali (Rewari)

प्रस्तावना :

भूगोल का अध्ययन क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है। पृथ्वी प्रकृति का एक अमूल्य उपहार है। मानव का प्रारम्भिक काल से ही पृथ्वी से घनिष्ठ संबंध रहा है। भूगोल प्रकृति तथा मानव के संबंधों का अध्ययन करता है। सभी विज्ञानों का उद्भव व विकास प्रकृति के साथ मनुष्यों की अंतः क्रियाओं के कारण ही हुआ है। उदाहरण के लिए सभ्यता के प्रारम्भिक चरण से अब तक अपने पर्यावरण की वनस्पतियों के साथ अन्तर्संबंधों के कारण मानव को उनके बारे में व्यापक जानकारी मिली। विश्व में अलग–अलग पर्यावरण में अलग–अलग प्रकार की वनस्पतियां पाई जाती हैं। अतः वनस्पति शास्त्र विज्ञान की एक अलग शाखा के रूप में विकसित हो गया। इसी तरह मानव ने अपने पर्यावरण के जीवों के बारे में व्यापक ज्ञान प्राप्त किया वह जंतु विज्ञान कहलाया। विभिन्न रोगों के उपचार के लिए प्राकृतिक वनस्पतियों से प्राप्त जड़ी बूटियों तथा रसायनों का ज्ञान अर्जित करके मानव ने चिकित्सा विज्ञान को विकसित किया। पृथ्वी की आन्तरिक संरचना पृथ्वी की उत्पति तथा भूतल की संरचना आदि के इतिहास की जानकारी अर्जित करके ज्ञान की एक अन्य शाखा भूगर्भ शास्त्र को विकसित किया। प्रकृति के साथ संबंध को ध्यान रखते हुए मिटटी के बारे में समस्त जानकारी को मृदा विज्ञान तथा खनिजों की जानकारी के ज्ञान समूह को खनिज विज्ञान कहा गया है।रसायनों के ज्ञान संग्रह को रसायन विज्ञान कहा गया है। इसी क्रम में पदार्थों की जानकारी के संकलन को भौतिक शास्त्र का नाम दिया गया। नक्षत्रों के बारे में ज्ञान को ज्योतिष विज्ञान का नाम दिया गया। इसी तरह मानव एवं पर्यावरण के अन्तर्संबंधों के परिप्रेक्ष्य में जलवायु से संबंधित ज्ञान को जलवायु विज्ञान), मौसम से संबंधित ज्ञान को मौसम विज्ञान , महासागरों या सागरों से संबंधित अर्जित ज्ञान को समुद्र विज्ञान आदि विज्ञान की शाखाओं के रूप में विकसित किया गया है। इसी तरह प्राकृतिक पर्यावरण के संदर्भ में मानव की आर्थिक गतिविधियों को अर्थशास्त्र, राजनीति क्रिया कलापों को राजनीति विज्ञान, सामाजिक ज्ञान के संग्रह को समाजशास्त्र, कृषि संबंधी ज्ञान को कृषि विज्ञान नाम दिया गया है।

अतः संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि मानव और प्रकृति के लगातार अन्तर्संबंधों के कारण ही ज्ञान व विज्ञान की अनेको शाखायें विकसित हुई हैं। अतः आधुनिक भूगोलवेताओं ने भूगोल को सभी विज्ञानों की जननी कहा है।

प्राचीन भारत (४००० बी०सी० से ८०० ए०डी० तक) में तत्कालीन भूगोल एक क्रमबद्ध विज्ञान के रूप में विकसित हो चुका था। इस काल के अनेक महाग्रन्थों एवं शिला लेखों में उस समय के भौगोलिक ज्ञान के विकास के बारे में अच्छी तरह से पता चलता है।सिंधु घाटी की सभ्यता का काल ४००० ईसा पूर्व से २५०० ईसा पूर्व तक था। इस सभ्यता काल में भारतवासियों को कृषि, जलवायु,

खनिजों, नदियों मैदानों व्यापार आदि का अच्छा ज्ञान था। वैदिक काल (२५००ई०पू०-१०० ई०पू०.) में नगरीय बस्तियां योजनाबद्ध आकृति एवं विन्यास की होती थी। रचित ग्रन्थों में आर्यों के उच्चस्तरीय भौगोलिक ज्ञान का वर्णन है। वैदिक काल में भौतिक भूगोल, आर्थिक भूगोल, सामाजिक भूगोल, कृषि भूगोल, परिवहन भूगोल, औद्योगिक भूगोल, खगोलिय भूगोल का विकास अपनी चरम सीमा पर था। ऋग्वेद के मन्त्रों से आर्यों के भौगोलिक ज्ञान का पता चलता है। अथर्ववेद वेद में भू आकृतिक विज्ञान, जलवायु, वनस्पति, खनिज, मानव बस्तियां, सामाजिक रीति-रिवाजों, खान-पान, रहन-सहन आदि का विस्तृत विवरण मिलता है।

रामायण और महाभारत काल (१६०० ई०पू०.-६०० ई०पू०.) के महाग्रन्थों में भी भौगोलिक ज्ञान की पुष्टि होती है। कौटिल्य का अर्थशास्त्र (३००ई०पू०.), मनुस्मृति (२०० ई०.पू०),आदि में भी भौगोलिक ज्ञान का उल्लेख मिलता है। सम्राट अशोक (३०० ईपू.) तथा गुप्त साम्राज्य काल (४०० से ७०० ई.) तक के भौगोलिक ज्ञान का वर्णन उस समय के ग्रन्थों, नाटकों तथा साहित्यों तथा शिलालेखो, ताम्रपत्रों आदि में मिलता है इस काल में आर्यभटट (जन्म ४७६ई.) एक वैज्ञानिक ने सर्वप्रथम पृथ्वी को सर्वप्रथम गोलाकार पिण्ड बताया था। उन्होने ही चन्द्रग्रहण का वर्णन किया। वाराहमिहिर (५०५ से ५८७ई.) ने खगोल विद्या को बहुत अधिक विकसित किया था। संक्षेव में यह कहा जा सकता है कि भारत में (४००० ईपू० से ८०० ई. तक) भौगोलिक अध्ययन का विकास उच्च कोटि का था सम्राट हर्षवर्धन के समय के भूगोल का ज्ञान हमें बाणभटट के लिखित (६२९ई०) हर्ष चरित से भारवी की काव्य ग्रन्थो, चिनी यात्री ह्वेनसांग (६२९ई.) के भारत वर्णन तथा शिलालेखों आदि से प्राप्त होता है। हर्ष कालीन भूगोल ७वीं शताब्दी का भूगोल कहलाता है।

अंधेरा युग (Dark Age) 300A.D. to1200A.D.

रोमन साम्राज्य के पतन के बाद तीसरी शताब्दी से १२वीं शताब्दी तक ईसाई धर्म अपनाने वाले महाद्वीपों, यूरोप तथा अमेरिका में भौगोलिक ज्ञान के क्षेत्र में कोई विशेष प्रगति न होने के कारण इसे अंध युग कहा जाता है। इस युग में बहुत सी भौगोलिक धारणाओं तथा वैज्ञानिक संकल्पनाओं को तोड़-मरोड.कर प्रस्तुत किया जाने लगा। इस युग में प्रत्येक कार्य की व्याख्या धार्मिक अंधविश्वासों के अनुसार की जाने लगी थी। पृथ्वी की आकृति को गोल होने की बजाय तस्तरीनुमा अथवा चपटी माना गया। इस काल में वैज्ञानिक संकल्पनाओं का स्थान कपोल कल्पित कल्पनाओं ने ले लिया तथा भौगोलिक विश्लेषण के स्थान पर अज्ञानता का साम्राज्य स्थापित हो गया, लेकिन तत्कालीन एशिया महाद्वीप तथा भारत देश के संदर्भ में इस युग को अंधेरा युग नही कहा जा सकता। इस काल में अरब विद्वानों ने भारत तथा अन्य एशियाई देशों में संरक्षित भौगोलिक ज्ञान के आधार पर अरब देशों में भौगोलिक ज्ञान स्वाभाविक रूप से विकसित करने का सफल प्रयास किया।

पुनर्जागरण काल

ईसा के बाद १२०० से १७०० तक का काल अंधकार युग एवं आधुनिक काल के मध्य का काल है जो पुनर्जागरण काल कहलाता है। इस काल में वाणिज्य संबंधी समुद्री यात्राएं पृथ्वी के नये क्षेत्रों की खोज एवं वैज्ञानिक खोज जारी रही। भौगोलिक विचारों की वैज्ञानिक संकल्पनाओं से अंधकार युग का अंधविश्वास व अज्ञान दूर होने लगा। इस काल में सौरमण्डल संबंधी सिद्धांतो, गुरूत्वाकर्षण, गैलिलियों का दूरबीन आविष्कार, छापेखाने का आविष्कार आदि बहुत महत्वपूर्ण थे। इस काल में नवीन भौगोलिक जानकारी का संकलन होता चला गया तथा धार्मिक अंधविश्वास कमजोर पड़ने लगा। इसलिए इसे पुनर्जागरण काल कहते हैं।

आधुनिक भूगोल

विख्यात यूनानी विद्वान इरेटॉस्थनीज (२७६ ईसा पूर्व से १९४ ईसा पूर्व) ने सर्वप्रथम Geography (भूगोल) शब्द का प्रयोग किया। लेकिन इसके बावजूद १७वीं शताब्दी के अंत तक भूगोल एक स्वतन्त्र विषय के रूप में विकसित न हो सका। १८वीं शताब्दी के प्रारम्भ में भूगोल एक स्वतन्त्र

विषय के रूप में विकसित होने लगा तथा इस शताब्दी के अंत तक जर्मन विद्वानों के कारण भूगोल ने एक स्वतन्त्र विषय का स्वरूप धारण कर लिया था। १८वीं शताब्दी में जर्मनी में भूगोल के आधुनिक तथा वैज्ञानिक विकास का आधार तैयार किया गया। विश्व के सभी देशों में आज पढा और पढाया जाने वाला भूगोल मूलतया १९वीं शताब्दी में जर्मन विद्वानों हम्बोल्ट (१७६९-१८५९) तथा रिटर (१७७९-१८५९) के नेतृत्व में विकसित हुआ था। आधुनिक भूगोल की भव्य इमारत १९वीं शताब्दी में जर्मनी में खडी की गई थी। इस समय में जर्मनी में भौगोलिक ग्रन्थों तथा अनुसंधानों के कारण वैज्ञानिक तथा आधुनिक भूगोल का आधार सुदृढ हुआ अतः अलेग्जेण्डर वॉन हम्बोल्ट तथा कार्ल रिटर को आधुनिक भूगोल का संस्थापक माना जाता है। इनके कार्यों तथा कार्यकाल को आधुनिक भूगोल का शास्त्रीय काल (Classical period of modern geography) कहा जाता है। उनके इस कार्य को बढाते हुए रैटजल, रिचथोफेन तथा हैटनर ने भूगोल में नवीन चिंतन पर अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। आधुनिक भूगोल के विकास में २०वी शताब्दी में फ्रांस में विकसित विचारधारा का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि इसी समय भूगोल की विषयवस्तु एवं भूगोल का अलग शाखाओं के रूप में विकास होता गया।

२०वी शताब्दी के पूर्वाद्ध तक विश्व के अन्य देशों (ब्रिटेन, संयुक्त राज्य अमेरिका, पूर्व सोवियत संघ) ने भूगोल का एक स्वतन्त्र विषय के रूप में अस्तित्व कायम हो गया था। प्रथम विश्वयुद्ध (१९१४-१९१९) के पश्चात तो भूगोल एक स्वतन्त्र विषय के रूप में काफी महत्वपूर्ण हो गया। द्वितीय विश्वयुद्ध की पूर्व संध्या पर प्रो. मैकिण्डर के हृदय स्थल सिद्धांत (Heart land theory) की व्यवहारिकता को देखते हुए सन् १९३९ में जर्मन रूसी गुट की स्थापना हो गई। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद भूगोल का अध्ययन मानव कल्याण के लिए किया जाने लगा। २०वीं शताब्दी की समाप्ति तक यह पूर्ण रूप से मानव कल्याण के विषय के रूप में काफी अधिक लोकप्रिय रहा। वर्तमान में भूगोल एक अन्तरानुशासनिक विषय बन गया। जिसमें भौतिक तथा सामाजिक विज्ञानों का समग्र अध्ययन किया जाता है।

REFERENCES:

1.Clark,A.H. (1954) Historical geography in James, P and Jones, C.F. eds. American Geography inventory and prospects Syracuse: Syracuse University press.
2. Casgrove, D (1989) Historical considerations of humanism: Historical materialism and geography in Kobayashi, A and Mackenzie (eds) Remarking human geography, Boston: Unwin hyman
3. Hussain, M, (2015) Evolution of geographical thought , Rawat publications, Jaipur , India.
4. Fleure , H.J. (1918) Human Geography in Western europe, London.
5. George, H.T. Kimble (1938) Geography in the middle age, Mathuen, London.
6. Gregory, D. (1981) Historical geography in Johnston, R.J. GregoryD, Haggaet, P, Smith, D.M. (eds) the dictionary of human geograhaa, Oxfor Basil Blackwell.

Dr. Satyabir Yadav
Head, Department of Geography , Govt. Collegefor Women, Pali (Rewari)